भारत में कम्युनिटी रेडियो की 20 वर्षों की यात्रा और उस सफर के महत्वपूर्ण पड़ाव

By Ashish Tiwari, Editor NYOOOZ.COM, SECRETARY M4C FOUNDATION

भारत में रेडियो और उसका प्रभाव

- रेडियो शिक्षा, मनोरंजन और सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम है।.
- आकाशवाणी (AIR) ने अपने कार्यक्रमों से समाज में समन्वय स्थापित करने और आम लोगों की मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- हरित क्रांति के दौरान AIR ने किसानों का मार्गदर्शन किया
- श्वेत क्रांति और नीली क्रांति में रेडियो ने अहम भूमिका निभाई ।

भारत में रेडियो और उसका प्रभाव

- **विज्ञान आधारित शैक्षिक कार्यक्रम**
- 1970-1980 में AIR ने विज्ञान आधारित शैक्षिक कार्यक्रम तैयार किए।
- कार्यक्रमों को विभिन्न भारतीय भाषाओं और स्थानीय बोलियों में तैयार किया गया।
- ये अत्यधिक सफल रहे और कई पुरस्कार व सम्मान प्राप्त किए।
  - नशे के खिलाफ जागरूकता **Radio DATE - Drug Alcohol Tobacco Education**
  - वयस्क साक्षरता के लिए रेडियो **PREAL - Project in Radio Education for Adult Literacy**
  - बच्चों के लिए रेडियो प्रयोग **CHEER - Children's Enrichment Experiment through Radio**
  - **Manav Ka Vikas and Nisarga Sampada**

सामुदायिक रेडियो की आवश्यकता

- भारत सांस्कृतिक , भौगोलिक और भाषाई रूप से विविध राष्ट्र है।
- 20 आधिकारिक भाषाएँ और 1500 से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं।
- स्थानीय , सुलभ और किफायती संचार माध्यम की आवश्यकता हमेशा बनी रही।
- 1960 के दशक में भारत में सामुदायिक रेडियो पर चर्चा शुरू हुई।

सामुदायिक रेडियो की शुरुआत

- AIR ने 1980 के दशक में स्थानीय (Local) रेडियो स्टेशन स्थापित करने का प्रयास किया।
- पहला स्थानीय रेडियो स्टेशन नागरकोइल में स्थापित किया गया।
- यह मॉडल सफल नहीं हो सका, लेकिन 1990 के दशक में नए रास्ते खुले।

महत्वपूर्ण बदलाव

- 1995 में सर्वोच्च न्यायालय ने एयरवेव्स को सार्वजनिक संपत्ति घोषित किया।
- पास्तापुर पहल में सरकार से सामुदायिक रेडियो प्रसारण सेवा को तीसरे प्रकार की सेवा के रूप में मान्यता देने की अपील की।
- मीडिया के लोकतंत्रीकरण और जमीनी स्तर पर समुदायों को सशक्त करने की आवश्यकता पहचानी गई।
- UNESCO ने भारत में सामुदायिक रेडियो रेडियो को बढ़ावा दिया ।
- श्रीलंका, फिलीपींस और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में पहले से ही सफल समुदाय रेडियो मॉडल थे।

ज्ञानवाणी की स्थापना (2001)

- 2001 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की पहल पर ज्ञानवाणी की शुरुआत हुई।
- मार्च 2001 में, मानव संसाधन मंत्रालय ने 40 शहरों में शैक्षिक प्रसारण के लिए रेडियो लाइसेंस प्रदान किए।
- IGNOU ने स्टेशनों का संचालन किया और उनकी सफलता ने रेडियो की प्रभावशीलता को सिद्ध किया।
- इसके बाद सरकार ने शैक्षणिक संस्थानों को कम्युनिटी रेडियो के लाइसेंस देने पर योजनाबद्ध तरीके से विचार किया

सामुदायिक रेडियो नीति 2002

- सरकार ने **2002 में समुदाय रेडियो नीति** की घोषणा की।
- पहले वर्ष में **57 शैक्षणिक संस्थानों** ने समुदाय रेडियो लाइसेंस के लिए आवेदन किया।
- **अन्ना विश्वविद्यालय** ने अप्रैल 2003 में लाइसेंस के लिए आवेदन किया।

पहले विश्वविद्यालय सामुदायिक रेडियो का लॉन्च हुआ

- सरकार ने दिसंबर 2003 में कई संस्थानों को लाइसेंस प्रदान किया। अन्ना विश्वविद्यालय ने तेजी से स्टूडियो सेटअप और अनुमोदन प्रक्रिया पूरी की।
- देश का पहला विश्वविद्यालय आधारित सामुदायिक रेडियो "अन्ना FM" 2004 में लॉन्च हुआ।

अन्ना FM के लिए कंटेंट निर्माण

- अन्ना FM ने कंटेंट निर्माण के लिए आस पास की कई संस्थाओं के साथ साझेदारी की
- अन्ना जेम्स स्कूल ने बच्चों के कार्यक्रम तैयार किए|
- विद्यासागर NGO ने दिव्यांगजनों पर जागरूकता के कई कार्यक्रम तैयार किए ।
- CEG परिसर के अंग्रेजी विभाग ने अंग्रेजी सिखाने के कार्यक्रम बनाए|
- राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान ने मुफ्त ऑडियो सामग्री प्रदान की|

शुरुआती चुनौतियाँ

- नए सामुदायिक रेडियो के लिए 500 घंटे के प्रोग्राम को पहले 100 दिनों में तैयार किया गया
- अन्ना FM ने मीडिया छात्रों के लिए प्रशिक्षण मंच प्रदान किया।
- अन्ना विश्वविद्यालय के सभी विभागों के छात्रों और प्रतिनिधियों ने कार्यक्रमों के निर्माण में उत्साहपूर्वक भाग लिया

अन्ना विश्वविद्यालय का आर्थिक सहयोग

- उस समय कोई विज्ञापन या प्रायोजक कार्यक्रम की इजाजत नहीं थी।
- तब अन्ना यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. ई. बालगुरुस्वामी ने कम्युनिटी रेडियो को पूरा समर्थन दिया।
- उन्होंने अन्ना एफएम की शुरुआत के समय से ही इसमें सक्रिय भूमिका निभाई।
- शुरुआत में उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि यूनिवर्सिटी अगले पाँच साल तक अन्ना FM को कुछ फंडिंग देती रहे।
- यह फंडिंग आज भी जारी है।

Further developments in CR

- 2005 में सरकार ने कम्युनिटी रेडियो (CR) नीति को बेहतर बनाने के लिए 'मंत्रियों का समूह' बनाया।
- श्री शरद पवार को इस समूह का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।
- 2006 में सरकार की बदली हुई नीति के तहत गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) और कृषि से जुड़ी संस्थाओं को भी CR लाइसेंस के लिए योग्य माना गया।
- आवेदन की प्रक्रिया को आसान बनाया गया और 2007 में एक ‘कम्युनिटी रेडियो फोरम’ की स्थापना हुई।
- सूचना और प्रसारण मंत्रालय में एक स्क्रीनिंग कमेटी बनाई गई जो आवेदनों की जांच करती थी।

II CR sammelan

II CR sammelan

FIRE EXIT
Ministry of Information and Broadcasting
Government of India
COMMUNITY RADIO
RENESS WORKSHOP
Ministry of Information and Broa
Government of India
Community Radio Awarene
October 30-31, 2023
Guwahati, Assam
in association with
Local Partner

2019 में यूनेस्को ने एक किताब प्रकाशित की – 'कम्युनिटी रेडियो इन इंडिया'।

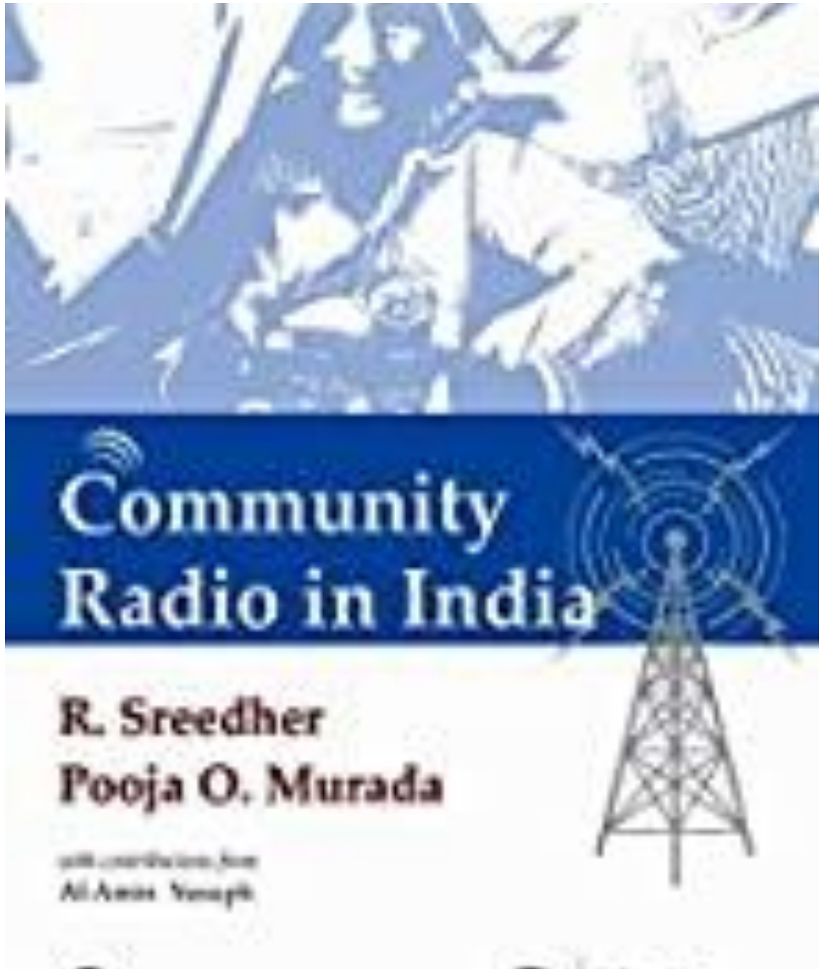

यह किताब डॉ. श्रीधर, सुश्री पूजा मुराड़ा और यूनेस्को के अल-अमीन यूसुफ ने मिलकर लिखी थी।

.

यह किताब कम्युनिटी रेडियो शुरू करने या उसे बेहतर बनाने की योजना बना रहे लोगों के लिए उपयोगी जानकारी और दिशा दिखाती है।

कम्युनिटी रेडियो की चुनौतियाँ

- पेशेवर रूप से प्रशिक्षित Broadcasters की कमी: कुशल लोग कम हैं, जिससे कार्यक्रमों की गुणवत्ता पर असर पड़ता है।
- वित्तीय और तकनीकी स्थिरता की समस्या: पैसों और तकनीक की कमी के कारण कम्युनिटी रेडियो स्टेशनों को चलाना कठिन होता है।इस लिए दिलचस्प और विविध कार्यक्रमों को बनाना मुश्किल होता है।
- औपचारिक पहचान का अभाव: कई जगहों पर कम्युनिटी रेडियो को मुख्य मीडिया नहीं माना जाता, इसलिए रिपोर्टर्स को स्थानीय अधिकारियों से बात करने या सरकारी जानकारी वाले सोशल मीडिया ग्रुप में शामिल होने में दिक्कत होती है।
- एक अच्छा साझा वेब पोर्टल नहीं है: सभी के लिए एक ऐसा मजबूत और डाउनलोड करने वाला वेब पोर्टल नहीं है जहां अच्छे कार्यक्रम एक-दूसरे के साथ शेयर किए जा सकें।

Thank you

Ashish Tiwari

यह PPT Dr R Sreedhar के व्यक्तिगत अनुभव और मेरे कम्युनिटी रेडियो, I-Radio क्षेत्र से जुड़ाव पर आधारित है। इसमें अनजाने में कोई चूक या त्रुटि हो सकती है, जो जानबूझकर नहीं की गई है।